अध्याय
03

समानता

सीखने का प्रतिफल

इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि समानता क्या है?और समानता कितने प्रकार के होते हैं। एक जागरूक नागरिक होने के नाते हम समानता का व्यावहारिक प्रयोग कैसे करेंगे?

समानता का तात्पर्य ऐसी परिस्थितियों से है जिसके कारण व्यक्तियों को व्यक्तित्व विकास के लिए समान अवसर प्राप्त हो सके। और इस प्रकार असमानता का अंत हो सके जिसका मूल कारण सामाजिक विषमता है।

लास्की के अनुसार समानता–

समानता मूल रूप में समानीकरण की एक प्रक्रिया है। इसलिए सबसे पहले समानता का आशय विशेष अधिकारों का अभाव है।

समानता के संबंध में प्रचलित धारणाएं।

- प्रकृति ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है।इसलिए सभी मनुष्य एक समान हैं।
- समानता प्रकृति के नियम के विरुद्ध है।
- समानता का अर्थ अक्षरशः समानता नहीं है।
- तार्किक भेदभाव समानता का उल्लंघन नहीं है।

समानता के विभिन्न आयाम

मनुष्य के विकास के लिए समानता एक महत्वपूर्ण पहलू है।

उसे हर क्षेत्र में समानता का अधिकार प्राप्त होना आवश्यक है। इसके अभाव में मनुष्य का सर्वांगीण विकास असंभव है।

© JCERT not to be republished

कानूनी समानता

कानूनी समानता का अर्थ है राज्य के द्वारा नागरिकों के साथ मनमाना व्यवहार नहीं करना। कानून की दृष्टि से सभी नागरिक समान हैं।

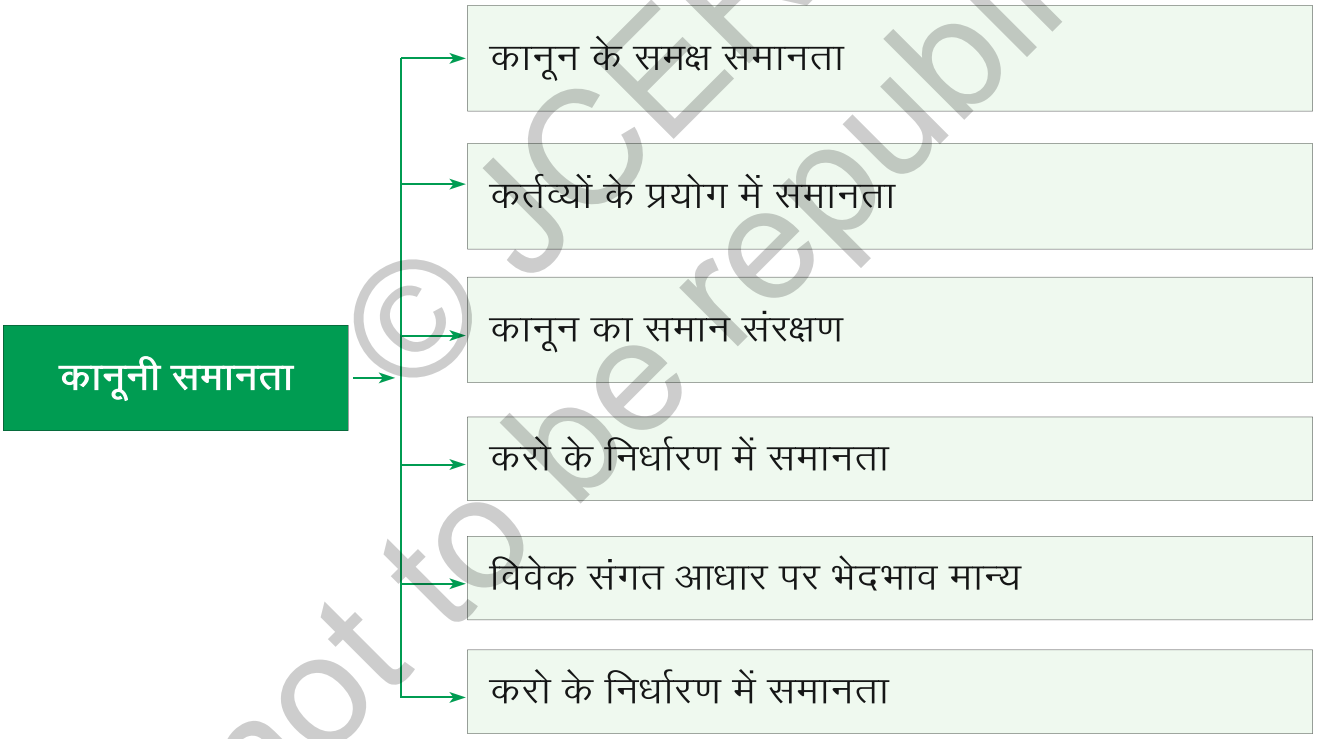

© JCERT not to be republished

राजनीतिक समानता

राजनीतिक समानता का अर्थ है राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करने का अवसर सभी नागरिकों को समान रूप से होना चाहिए।

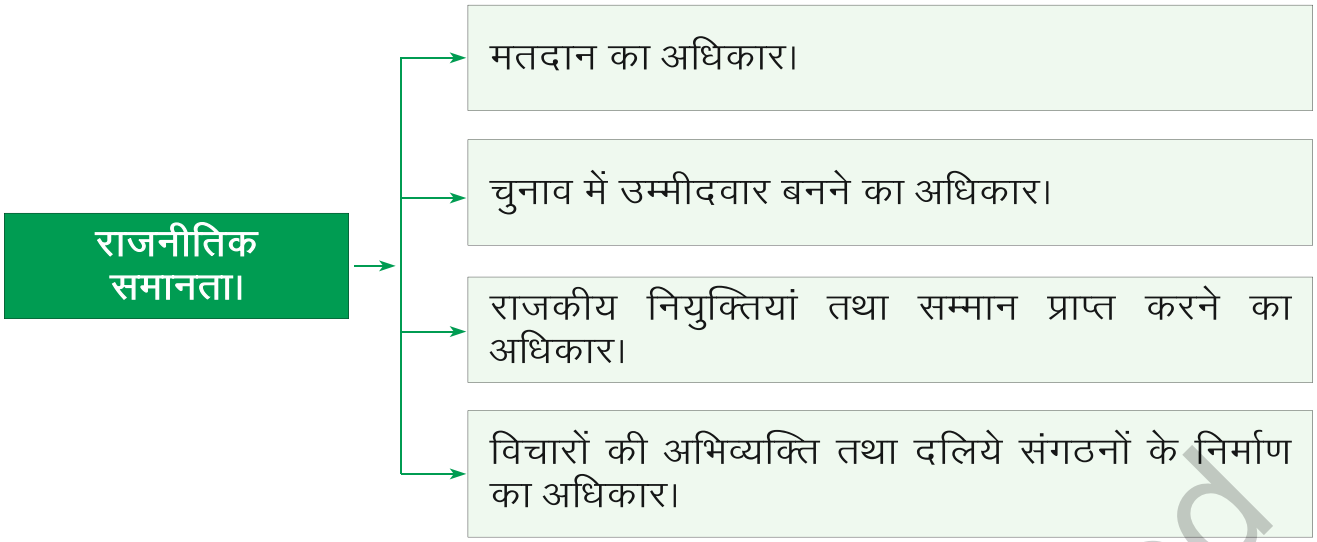

सामाजिक समानता

सामाजिक समानता का अर्थ है समाज में सभी व्यक्तियों को एक समान समझना। धर्म, जाति, लिंग या जन्म स्थान के नाम पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।

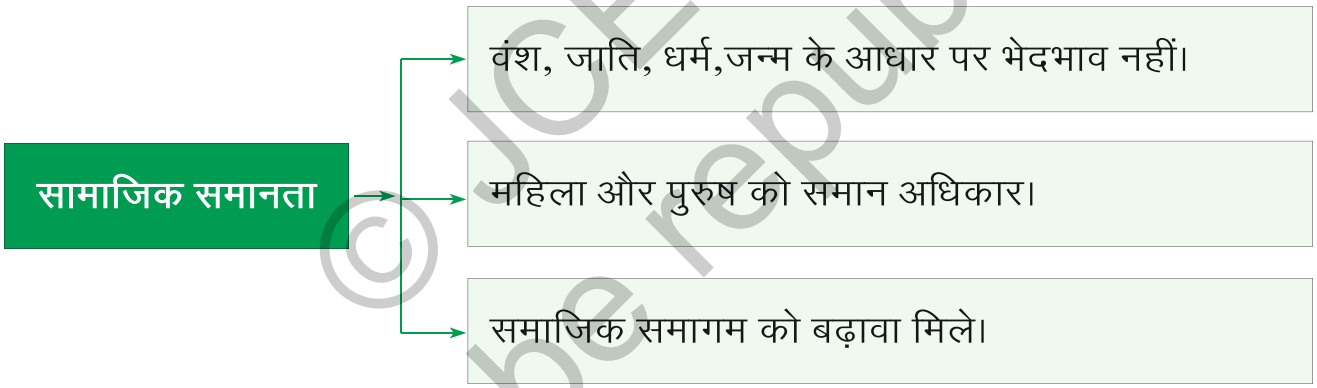

आर्थिक समानता

आर्थिकसमानता का अर्थ है सभी व्यक्तियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना तथा संपत्ति की दृष्टि से समाज में भारी विषमता का ना होना। आर्थिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि सभी व्यक्तियों को समान भौतिक साधन प्राप्त हो।

© JCERT not to be republished

आर्थिक समानता

- सभी व्यक्तियों को न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।
- सभी व्यक्तियों को रोजगार, पर्याप्त मजदूरी और उचित अवकाश की सुविधा होनी चाहिए।
- बेरोजगारी, बुढापा, बीमारी की स्थिति में व्यक्तियों को राज्य की ओर से आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए।
- महिला और पुरुष को समान काम के लिए समान वेतन मिलना चाहिए।
- राष्ट्र की संपत्ति तथा उत्पादन के साधन कुछ व्यक्तियों के हाथों मैं केंद्रित नहीं होना चाहिए।

भारत जैसे विकासशील देशों में प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार अति आवश्यक है। सकारात्मक भेदभाव के माध्यम से देश में समानता लाया जा सकता है।

समानता और नारीवाद

नारीवाद स्त्री- पुरुष के समान अधिकारों का पक्ष लेने वाला राजनीतिक सिद्धांत है। वे स्त्री या पुरुष नारीवादी कहलाते हैं जो मानते हैं कि स्त्री-पुरुष के बीच की अनेक असमानता ना तो नैसर्गिक हैं और ना ही आवश्यक। नारी वादियों का मानना है कि असमानताओं को बदला जा सकता है और स्त्री पुरुष एक समान जीवन जी सकते हैं।

स्मरणीय तथ्य

- संविधान के अनुच्छेद 15 के अनुसार जाति धर्म लिंग जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।
- अनुच्छेद 16 के अनुसार सार्वजनिक रोजगार के मामले में अवसर की समानता है
- संविधान के अनुच्छेद 17 के अनुसार अस्पृश्यता (छुआछूत) का अंत किया गया है।
- अनुच्छेद 18 के अनुसार राज्य को किसी भी सैन्य और शैक्षणिक विशेषता के अलावा कोई अन्य उपाधि प्रदान नहीं करनी चाहिए।

© JCERT not to be republished

समानता और समाजवाद

समाजवाद का मुख्य सरोकार वर्तमान असमानताओं को न्यूनतम करना और संसाधनों का न्याय पूर्ण बटवारा है।अर्थात समाजवाद एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है जिसमें सभी प्रकार के असमानताओ का अंत हो तथा एक वर्ग विहीन समाज की स्थापना हो।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. समाज में समानता का निहितार्थ किसका अभाव है।

   a. अवरोधों का

   b. विशेषाधिकार का

   c. प्रतिस्पर्धा का

   d. सामाजिक वर्गों का

2. संविधान के किस अनुच्छेद में कानूनी समानता का अधिकार है।

   a. अनुच्छेद 12

   b. अनुच्छेद 13

   c. अनुच्छेद 14

   d. अनुच्छेद 15

3. संविधान के किस अनुच्छेद में अस्पृश्यता का वर्णन किया गया

   a. अनुच्छेद 14

   b. अनुच्छेद 15

   c. अनुच्छेद 16

   d. अनुच्छेद 17।

4. संविधान के किस अनुच्छेद में समानता का अधिकार नहीं है।

   a. अनुच्छेद 14 से 18

   b. अनुच्छेद 19 से 24

   c. अनुच्छेद 24 से 28।

   d. अनुच्छेद 29से 37

5. संविधान के किस अनुच्छेद में अस्पृश्यता का वर्णन है।

   a. अनुच्छेद 14

   b. अनुच्छेद 15

   c. अनुच्छेद 16

   d. अनुच्छेद 17

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. अवसरों की समानता का क्या अर्थ है।

प्रश्न 2. आर्थिक समानता से क्या समझते हैं।

प्रश्न3. स्वतंत्रता के लिए प्रतिबंधों का होना क्यों आवश्यक है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. समानता के विभिन्न आयामों का वर्णन करें।

प्रश्न 2. देश में समानता कैसे लाया जा सकता है एक नोट लिखें।

© JCERT not to be republished